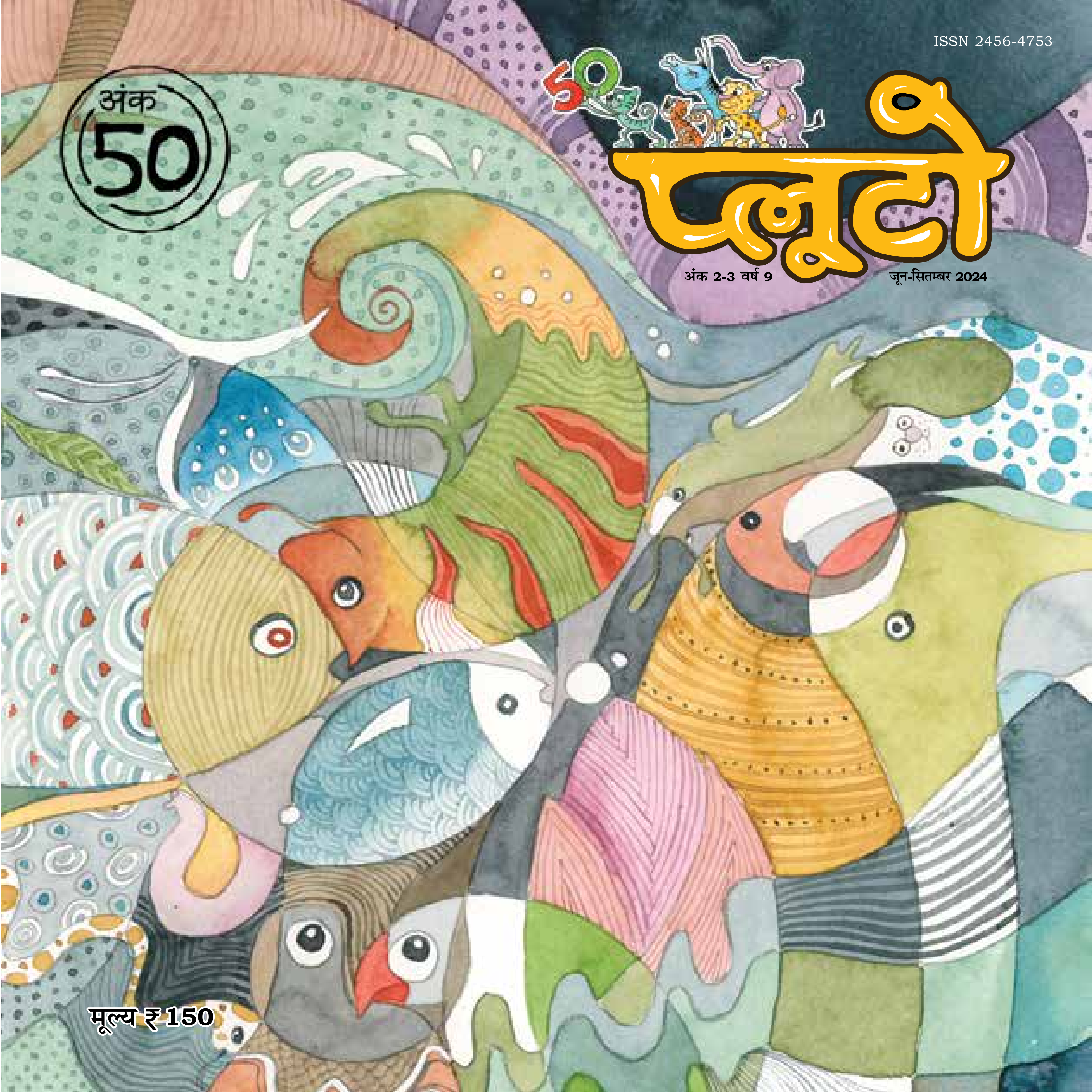
ISSN 2456-4753
अंक
50
प्लूटो
अंक 2-3 वर्ष 9
जून-सितम्बर 2024
मूल्य ₹ 150

मैं ना...

चित्र: राजीव आइप

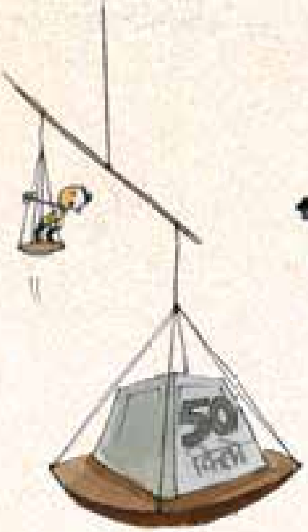

टाइगर बीटल

लेख व चित्र: राजीव आइप

रातभर पानी गिरा था। अगली सुबह मैं कच्चे रस्ते पर टहलने निकला। आसपास झाड़ियाँ थीं। वहाँ कई सारे टाइगर बीटल दिखे। चटक पीले रंग के पैटर्न वाले। वो किलबिट-किलबिट करते जा रहे थे। जैसे घण्टी बजने से पहले स्कूल पहुँचने की जल्दी में बस्ता टाँगे बच्चे दौड़ लगा रहे हों। टाइगर बीटल एक घण्टे में नौ किलोमीटर तक दौड़ सकते हैं। बिना डगमगाए इतना तेज़ दौड़ने से ये कमाल के शिकारी हुए हैं।

जाने किस स्कूल में वे शिकार के पैंतरे सीखते हैं! खैर, अगर तुम्हें दिख जाएँ तो उन्हें हैलो कहना। और उनके अगले एडवेंचर के लिए गुडलक तो कहोगे ही।

स्कूल से वापस आते समय

चित्रकथा: पंकज सैकिया

अगले दिन

भजिया रानी

सुदीक्षा अग्रवाल, चौथी, डीपीएस, पुणे
चित्रः हबीब अली

बारिश आई चलो चलें
मम्मी पापा सब मिलें
चलो मिलाएँ बेसन पानी
और बनाएँ भजिया रानी।

खतरा कहाँ है?

अरशद खान
चित्रः एलन शॉ

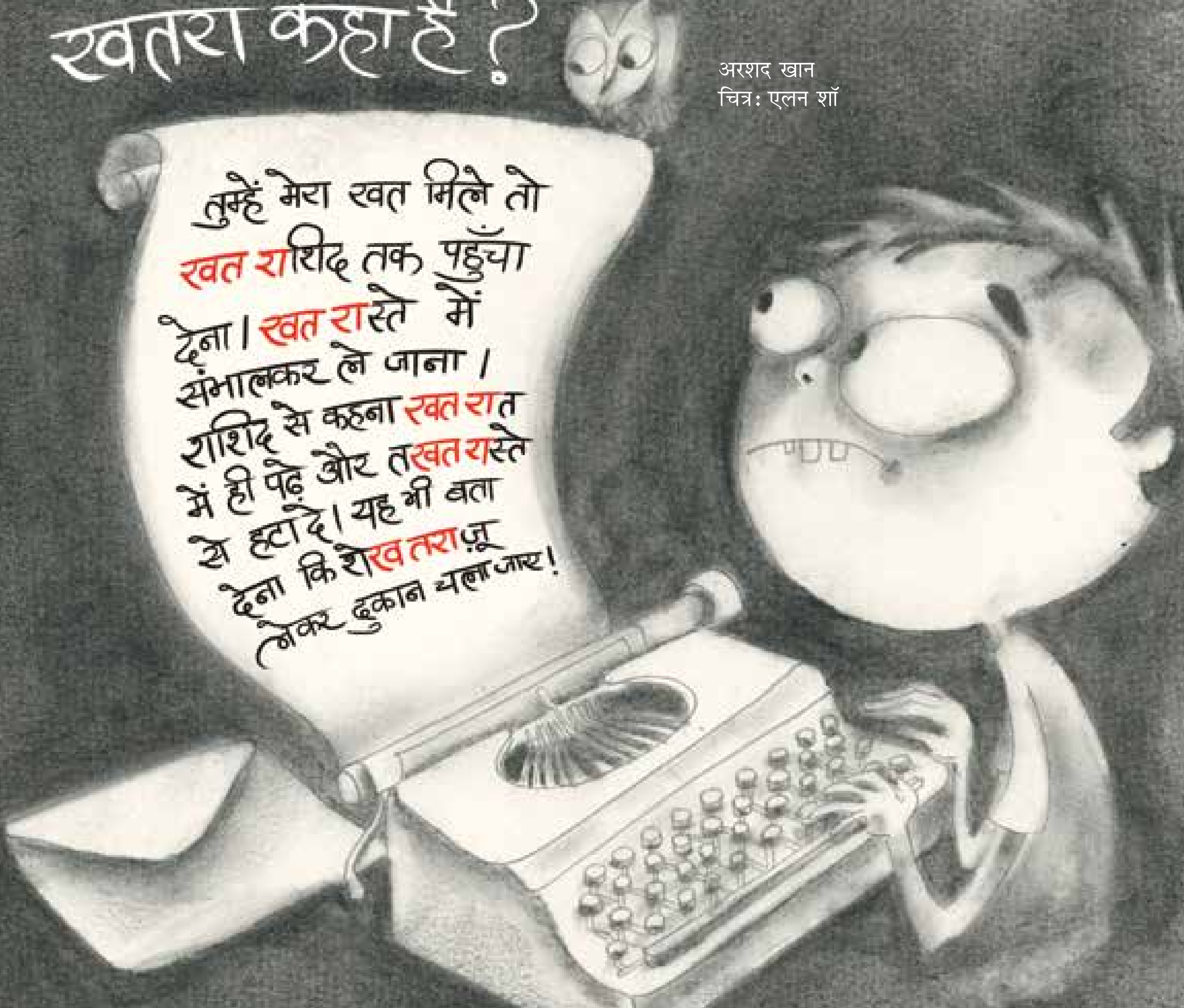

प्लूटो अंक 2-3 वर्ष 9 | जून-सितम्बर 2024

बड़ुंगड़ुप्पा

नेहा सिंह
चित्र: प्रिया कुरियन

असम में साल के एक बोहत बड़े जंगल के पास कुछ छोटे-छोटे गाँव थे। साल के पेड़ काटने सरकार पहुँच गयी। गाँववालों को पता ही नहीं चला क्योंकि उनका घने जंगल से कम ही लेना देना था। पर उन्हें इतना पता था कि जंगल को बचाना है।

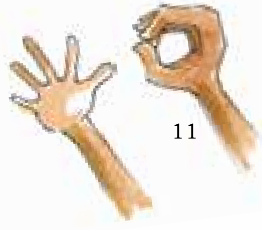

लोगों ने जंगल के बीच नाच-गाना-नाटक करना और बड़ुंगडुप्पा बजाना शुरू कर दिया। बड़ुंगडुप्पा गाँव के लोग बाँस से बनाते थे। जब सरकारी लोग जंगल के बीच लोगों को नाटक करते देखते तो दूसरी तरफ़ जाके पेड़ काटने लगते। गाँववाले हर तरफ फैल कर नाच-गाना-नाटक की प्रैक्टिस करने लगे। नाटक भी वे यहीं करते। आसपास के गाँववाले नाटक देखने आने लगे। जंगल के बीच में ही एक छोटा-सा गाँव बना दिया और नाम रखा - बड़ुंगडुप्पा।

धीरे-धीरे बात फैलती गयी। दूर-दूर से लोग नाटक देखने आने लगे। मिट्टी का बड़ा स्टेज बनाया गया। बाँस के बनाये बेंच। सरकार डर गयी। इतने सारे लोगों की नाक के नीचे पेड़ काटना मुश्किल होने लगा।

अब तो ये नाटकवाले पूरे असम की शान बन गए थे। देश-विदेश से लोग उनके नाटक देखने आने लगे थे। सरकार ने गाँववालों से हाथ मिला लिया, “आज से तुम्हारे नाटकों को सरकार की मदद मिलेगी। साल के पेड़ नहीं काटेंगे।”

आज भी गाँववाले उस जंगल के बीचों-बीच नाटक करते हैं। हज़ारों लोग उन्हें देखने, उस जंगल में रहने, उनसे मिलने आते हैं। और जाते वक्त साथ ले जाते हैं - बड़ुंगडुप्पा।

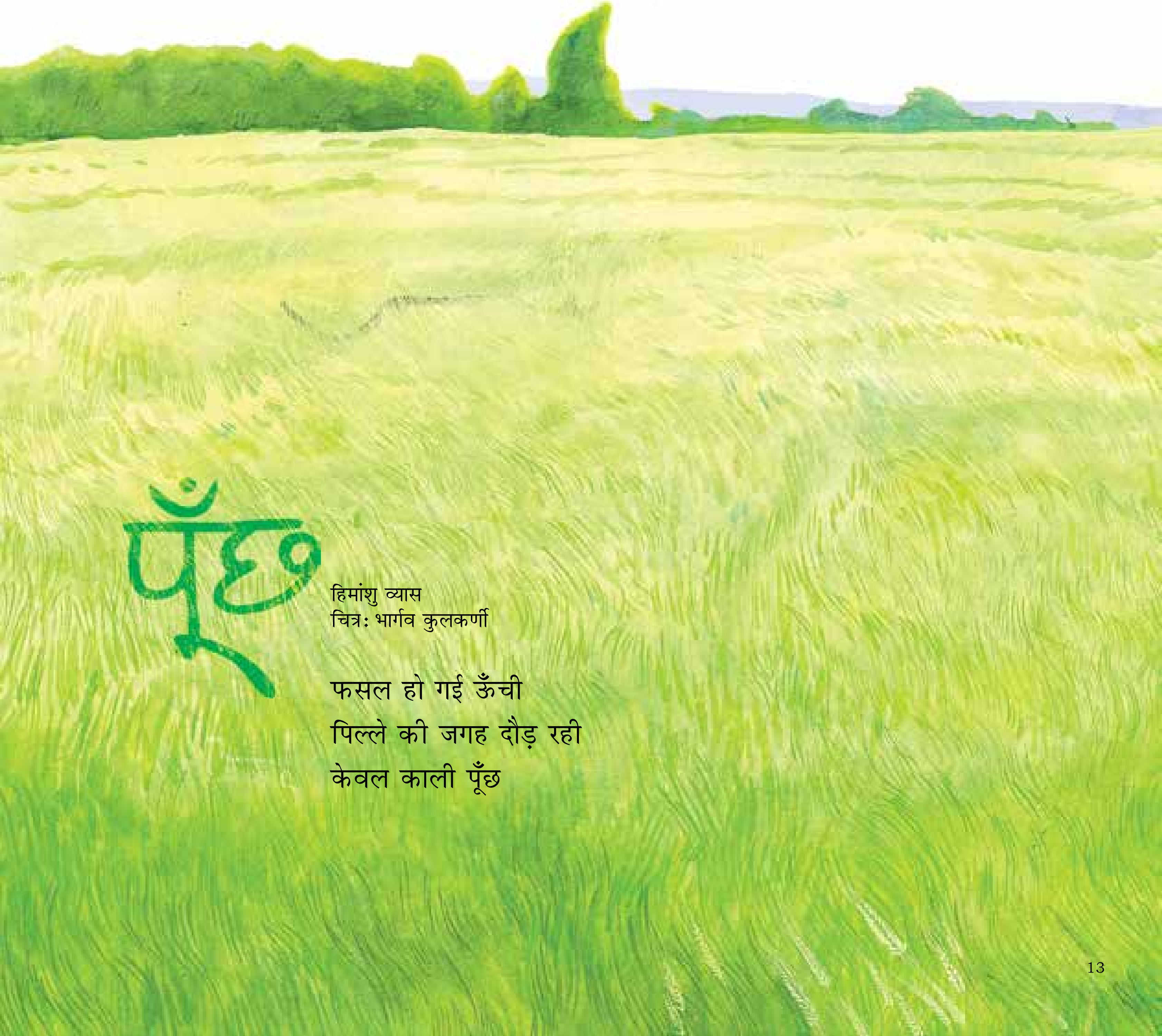

पूँछ

हिमांशु व्यास
चित्र: भार्गव कुलकर्णी

फसल हो गई ऊँची
पिल्ले की जगह दौड़ रही
केवल काली पूँछ

अरशद खान
चित्र: राजीव आइप

रम्पत दादा ने एक सैलून खोल रखा है। वह घोड़ों के बाल काटते हैं। नीम के नीचे उनकी छोटी-सी गुमटी है। उस पर उन्होंने एक तख्ती लगा रखी है- यहाँ घोड़े सजते हैं।

मैं जब भी उधर से गुज़रता हूँ, वे घोड़ों के बाल तराशते दिख जाते हैं। उनकी मशीन चर्र... करते हुए चलती रहती है। अड़ियल से अड़ियल घोड़ा भी उनके सामने सीधा खड़ा रहता है।

उनकी गुमटी पर एक किनारे बाल्टी भर पानी और हरी घास का एक गट्ठर रखा रहता है। बाल काटने से पहले वे घोड़े को घास खिलाते हैं। पानी पिलाते हैं। फिर देर तक गर्दन पर थपथपाते रहते हैं। बाल कटने के बाद भूरी अयालों को लहराकर घोड़ा हिनहिनाता है तो उनका चेहरा खिल उठता है।

उन्हें घोड़ों को होने वाली बीमारियों की भी काफी जानकारी है। जिन घोड़ों को चोट या घाव होता है, उसे टिटनेस की सुई लगा देते हैं। कभी-कभी लोग सिर्फ सुई लगवाने ही आते हैं।

उनके पास घोड़ों से जुड़े तमाम किस्से हैं। एक तरफ उनकी मशीन चलती रहती है, दूसरी तरफ उनका किस्सा।

एक बार मैंने उनसे मज़ाक में पूछा, "दादा, क्या आप गधों के भी बाल काटते हैं?"

वे हँसकर बोले, "हाँ, हाँ, क्यों नहीं। आइए, बैठिए।"

वहाँ बैठे सारे लोग हँस दिए। मैं भी हँस पड़ा।

कीड़ा कीड़ी

आशा यादव
चित्र: एलन शॉ

एक था कीड़ा
एक थी कीड़ी
चूल्हे में थी
लकड़ी सीड़ी

निकल रहा था धुआँ
कीड़ा बोला, ये क्या हुआ

कीड़ी बोली, फायर ब्रिगेड बुलाओ
कीड़ा बोला, नहीं, मोटर-चलाओ

बंटी ते पोंगा

वरुण ग्रोवर
चित्रः एलन शॉ

इक केंचुआ नाम सी बंटी
अपने घर तों निक्लया
सोच्या थोड़ा घुम्मांगा
पर कंचे ते जा फ़िसल्या

सामने तों आंदा सी इक
अपनी मस्ती विच घोंगा
विसल बजांदा धूल उड़ान्दा
नाम सी ओसदा पोंगा

बंटी ज़रा जा फ़िसल के गुड़मुड़
पोंगे टों टकराया
पोंगे ने घबरा के अपने
कवच नूँ चाक्क उठाया

बंटी दा ते स्वेटर उधड़या
फटी पोंगी दी पैंट
केंचुए दा घोंगे नाल
एंज होया एक्सीडेंट।

कौन है?

विनोद कुमार शुक्ल
चित्र: राजीव आइप

एक गाँव में दो सहेलियाँ आम के एक बगीचे में घुसने की फिराक में थीं। एक छह साल की। दूसरी सात साल की।

एक ने कहा, "आम कहने से ही मुझको गले में आम की चोपी लग जाती है। तब खाँसी आती है। छींक भी आती है।" और वह खाँसने लगी। फिर ज़ोर-से छींकी।

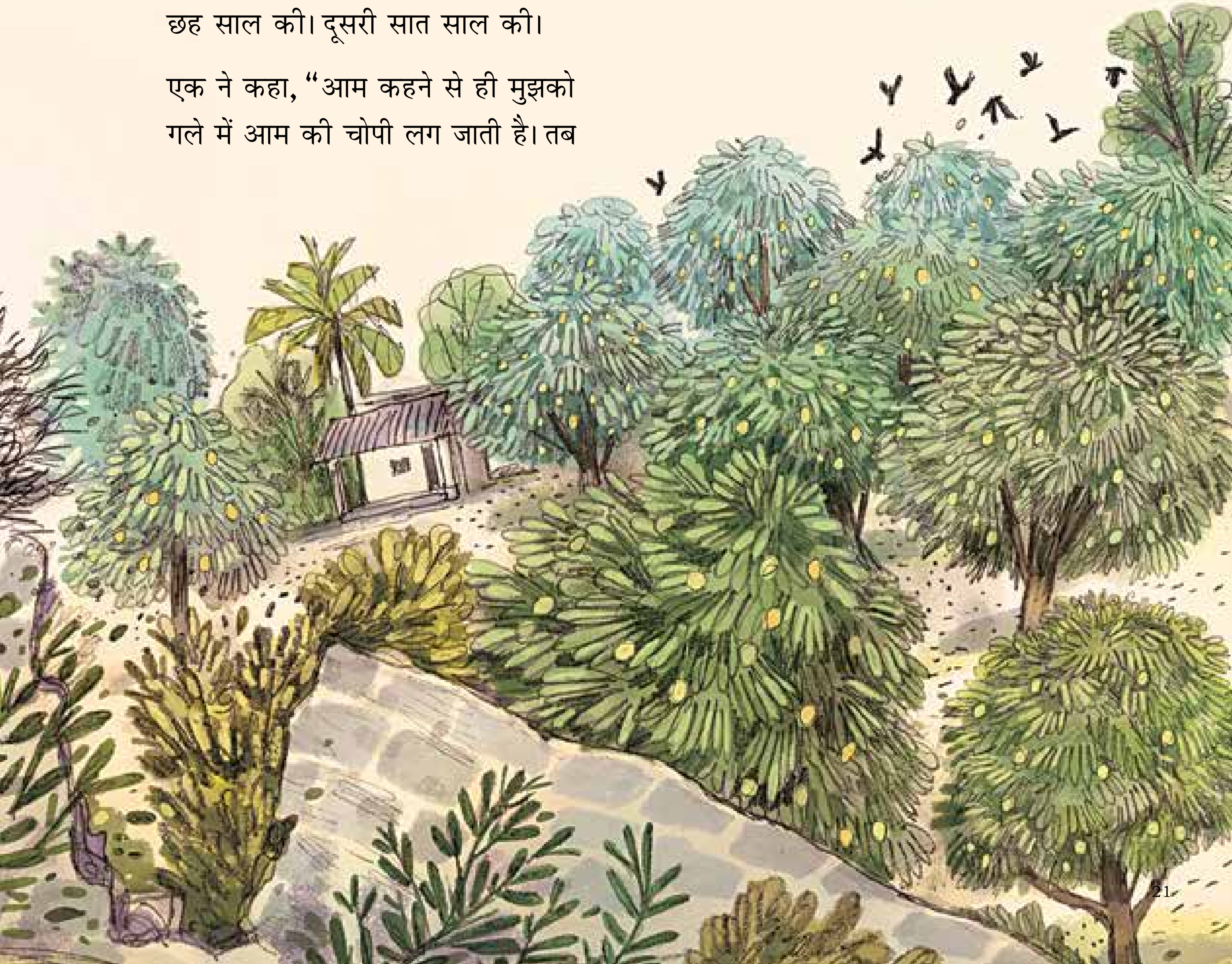

दूसरी ने कहा, "बाबा रे! इतनी ज़ोर-से छींकी। बगीचे के रखवाले तक आवाज़ गई होगी!"

एक ने कहा, "उसकी झोपड़ी दूर है। वहाँ तक आवाज़ नहीं गई होगी। उसको क्या मालूम कि आम खाने हम घुसने वाले हैं।" कह कर, 'आँक छीं' फिर छींकी।

दूसरी ने कहा, "और मुझको तो आम छूने से ही छींक आ जाती है।"

पहली ने कहा, "फिर आम बीनेगी कैसे! रहने दे। तू मत जा।"

दूसरी ने कहा, "अच्छा!"

पर पहली और दूसरी दोनों बगीचे में घुस गईं। दोनों चुपचाप थीं। तब पेड़ों के नीचे दो-चार ही आम गिरे थे।

एक ने देखा, पेड़ों पर पके पीले आम लटके हुए हैं। उसने आम पकड़ने को उचक कर हाथ ऊँचा किया। तो उसका हाथ नहीं पहुँचा।

उसने दूसरी से कहा। उसकी ऊँचाई ज़्यादा थी।

आम छूने से जिसको चोपी लगती है, उसने लटके हुए आम को तोड़ लिया। उसको थोड़ा उचकना पड़ा था। पर आम तोड़ते ही वह ज़ोर-से छींकी। दोनों सन्न रह गईं। बगीचे का बूढ़ा रखवाला छुपा हुआ था। वह चाहता था बच्चे आम खा लें। लेकिन बच्चे भाग गये।

तब रखवाले ने कहा, "कौन है?" रखवाले को भी 'कौन है' बोलने से छींक आती थी। और वह छींका।

आसमान और पत्थर की चिट्ठी

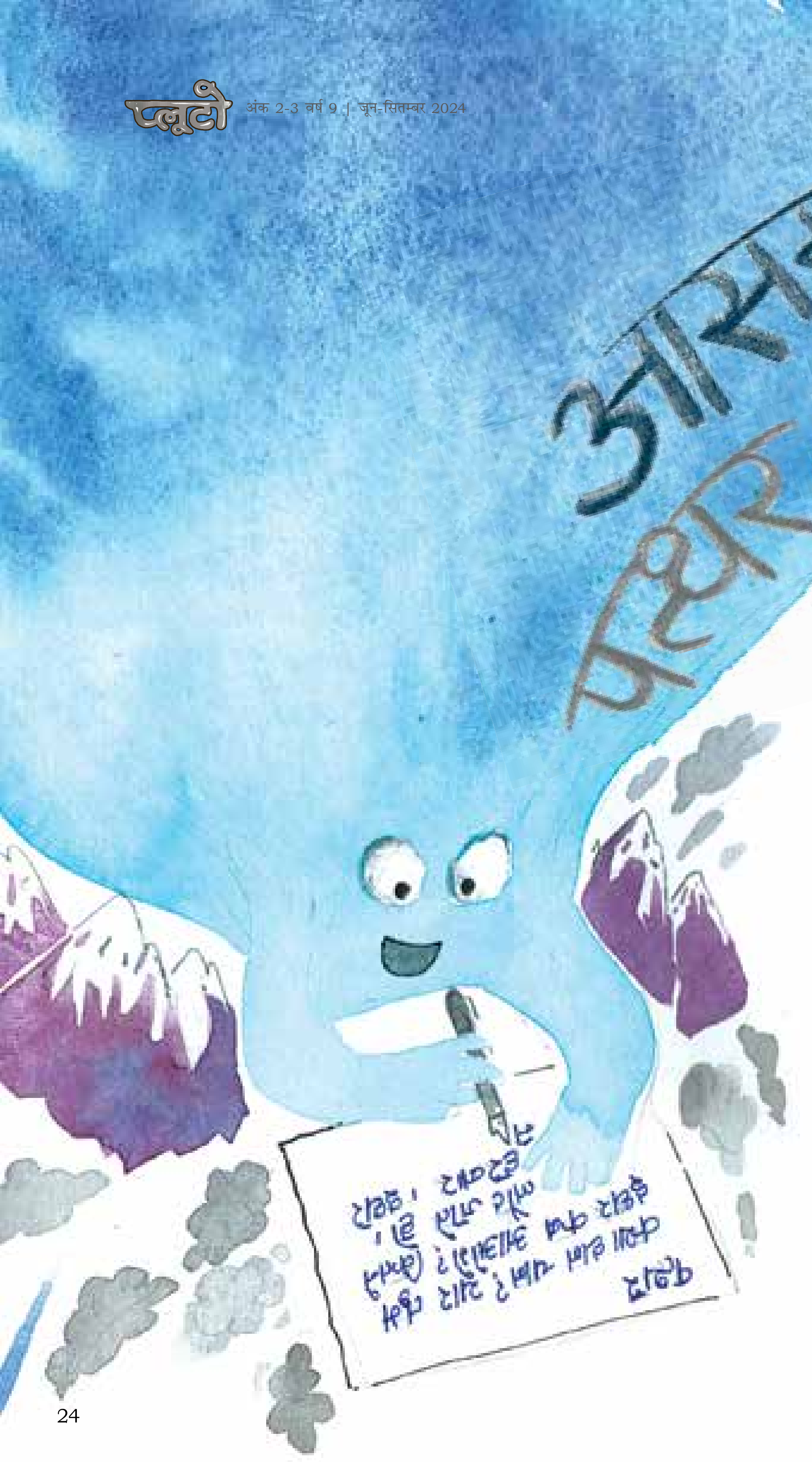

दिव्या
चित्रः पंकज सैकिया

हैलो पत्थर,

क्या हालचाल है? कभी इधर आ ही जाओ, यार। कब से देख रहा हूँ...तुम आते-आते एकदम से पलट जाते हो। इधर का रास्ता तो एकदम सीधा-सीधा है। कोई ट्रैफिक जाम भी नहीं होता। ऐसा करो, इन गर्मियों में आ जाना। इधर बहुत ठण्डा रहता है।

ठीक है...

तुम्हारा,

आसमान

दोस्त,

मैं चंगा। अपनी सुनाओ। यार, मुझे भी तुमसे मिलने का मन तो बहुत है। पर कभी बन नहीं पाता। इन दिनों दो चींटियाँ मेरी छाँव में सुस्ताने रुकी हैं। सो मेरा आना थोड़ा मुश्किल है। ऐसा करते हैं, शाम को मैं तालाब के पास आ जाऊँगा। तुम तो वहाँ आते ही हो। हम वहीं मिल लेंगे।

जल्दी मिलते हैं...

पत्थर

देखा एक दोपहर

मनीषा बैरवा, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र, सवाईमाधोपुर
चित्रः देबब्रत घोष

देखा एक दोपहर
भारी भारी पैर
बड़ी बड़ी आँख
पैने पैने दाँत
सूखा मेरा खून
दिखे जब चाकू से नाखून

फैमली ट्री

चित्रकथा: प्रोइति रॉय

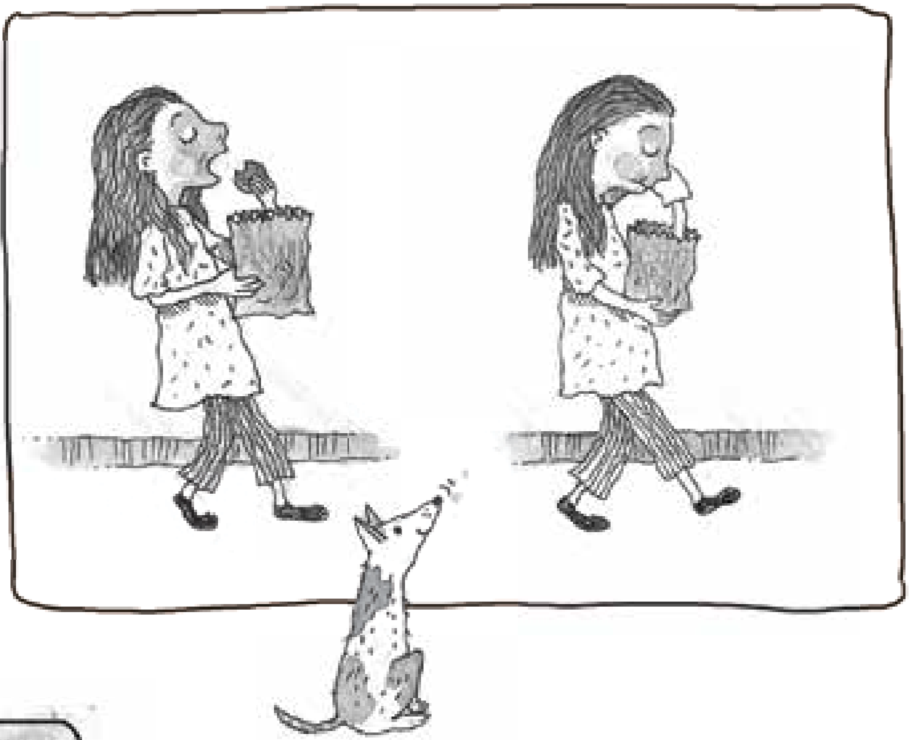

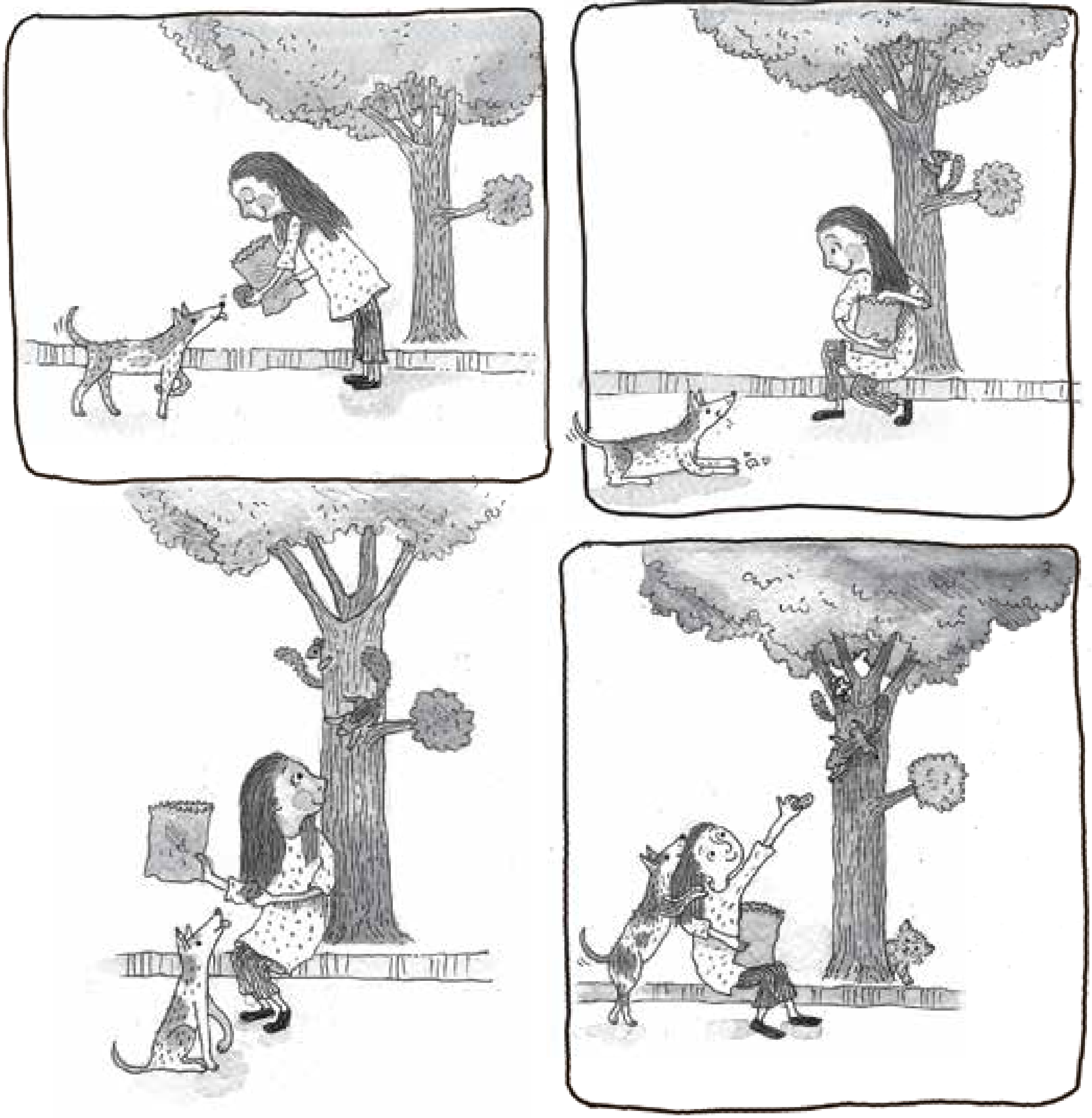

शशि सबलोक
चित्र: एलन शॉ

मैंने एक फिल्म देखी थी।

उसमें एक गधा था। और एक लड़का था। लड़के का नाम तहान था। फिल्म का नाम भी तहान था। गधे का नाम बीरबल था। तहान और बीरबल दोस्त थे। लड़के के मम्मी-पापा ने एक आदमी से पैसे लिए थे। वो वापस नहीं कर पाए तो आदमी बीरबल को ले गया। लड़का अपने दोस्त गधे को छुड़ाने उसके पीछे जाता है। बहुत मुश्किल से लास्ट में दोनों फ्रेंड्स मिल जाते हैं।

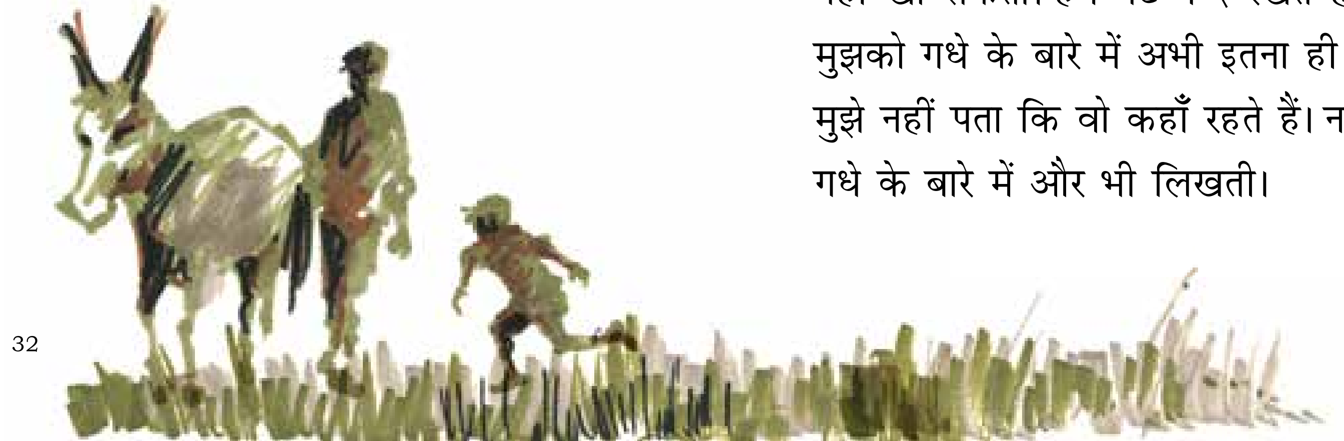

मैं अपने घर में एक बिल्ली के साथ रहती हूँ। एक दिन वो घर नहीं आई तो मैं रोने लगी थी। पापा और मैं उसे ढूँढने गए थे। पर वो नहीं मिली। फिर रात में वो अपने आप आ गई थी। उससे मिलकर मैं फिर से रोने लगी थी।

मैंने एक एड्वरटाइज़्मेंट में एक गधा देखा था। उसके बहुत बड़े-बड़े व्हाइट दाँत थे। शायद टूथपेस्ट का विज्ञापन था। फनी था वो।

हमारी बुक में एक कहानी है। उसमें गधा एक धोबी के साथ रहता है। धोबी उस पर कपड़े रखकर ले जाता है। हमारा धोबी तो स्कूटी में आता है। मैंने एक बार एक गधा देखा था। वो हमारे लॉन के लिए मिट्टी लाया था। हमने लॉन में घास लगाई थी। हमारी बुक में लिखा है कि गधे घास खाते हैं। पर हमारे लॉन की घास कोई नहीं खा सकता। हम गेट बन्द रखते हैं।

मुझको गधे के बारे में अभी इतना ही पता है। मुझे नहीं पता कि वो कहाँ रहते हैं। नहीं तो मैं गधे के बारे में और भी लिखती।

गधे का पता नहीं वो पहाड़ी चढ़-उतर सकता है कि नहीं। मैं चैरी के साथ रहती हूँ फिर भी उसके बारे में 100 परसेंट नहीं बता सकती। अबकी बार गधा दिखा तो उसे अच्छी तरह देखूँगी। फिर उस पर लिखूँगी।

मेरी बकरी का नाम चैरी है।

गधा मेरे घर है नहीं इसलिए उसको कोई नाम नहीं दिया है। चैरी को मैं अपनी फ्रॉक पहनाती हूँ। पर गधे को वो नहीं आएगी। उसकी गर्दन में ही अटक जाएगी। एक दिन मैंने एक गधे को देखा था। उसके ऊपर एक बैग था। उसमें बहुत सारी मिट्टी थी। चैरी के ऊपर हम इतना सारा सामान थोड़ी रख सकते हैं। रखेंगे तो वो उछल-उछल कर गिरा देगी।

मैं जब विनय के साथ रस्सी कूदती हूँ तो चैरी भी उछलने लगती है। गधा ऐसे उछल नहीं पाएगा। वो भारी होता है।

चैरी मेरे साथ पहाड़ी पर चढ़ जाती है, उतर भी जाती है। वो पतली है इसलिए ही। पैर भी उसके पतले-पतले हैं।

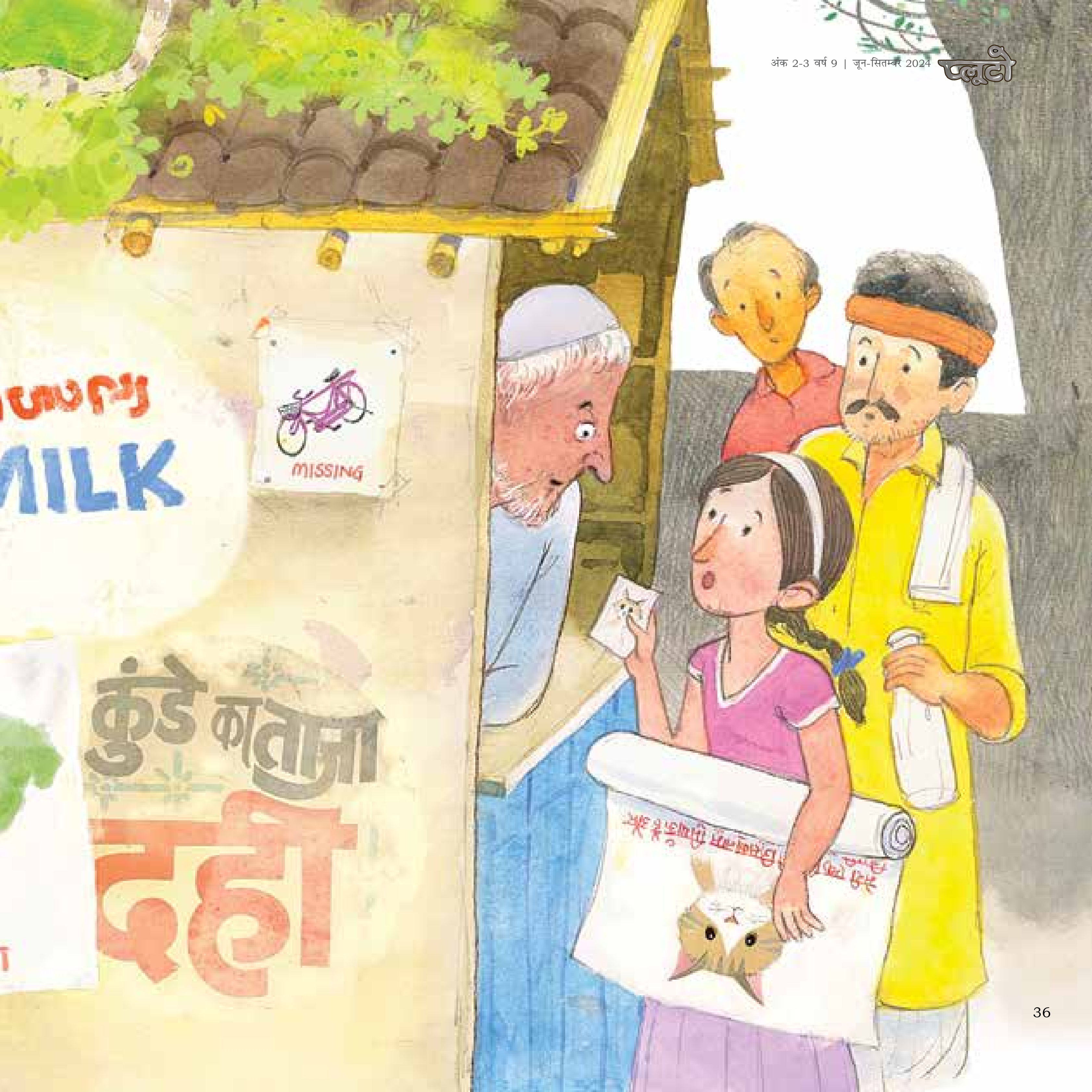
MILK
MISSING
कुंडे का ताज़ा
दही

म्याऊँ

मुज्तबा खान
चित्र: भार्गव कुलकर्णी

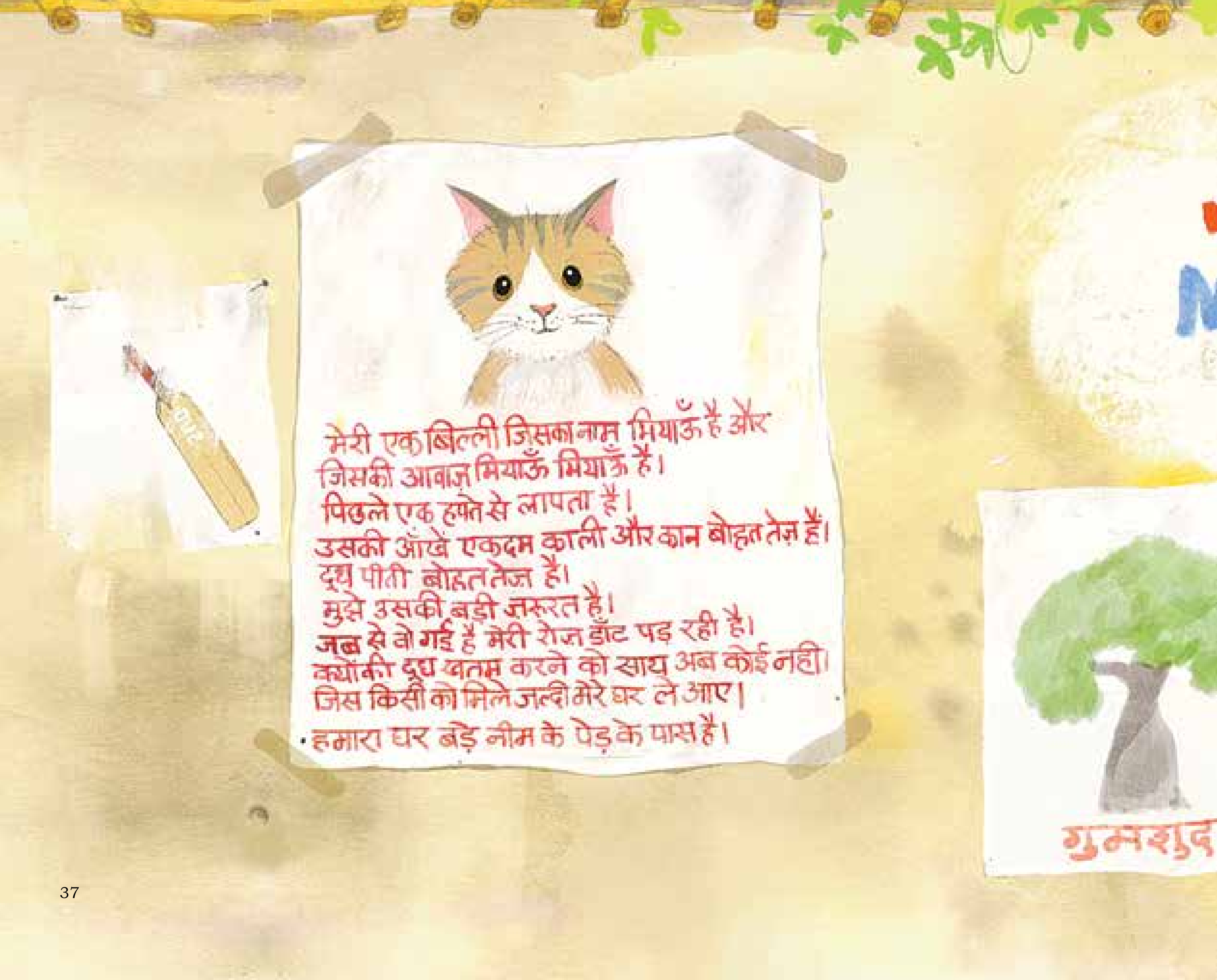

चप्पल टूटी

सुबीर शुक्ला
चित्रः प्रिया कुरियन

निकला पट्टा चप्पल का
टिल्लू जी घबराए
नई नवेली चप्पल तोड़े
घर कैसे वो जाए

धर दबोचा पट्टे को
दाँव पेंच लगाए
पत्थर, लकड़ी, रस्सी, साबुन
बार-बार अजमाए

हुआ नहीं जब कुछ भी
हथौड़ा जाकर लाए
दे उठाए हाथ को
तीन बार बरसाए

हुआ न जाने कैसे ये
टिल्लू जब घर आए
दो हाथ पे, एक पाँव पे
पट्टी बाँधे लाए

पीछे-पीछे

मुकेश नौटियाल | चित्र: प्रशान्त सोनी

धूप ढलने लगी थी। बर्फीले बियाबान में उत्सू नामग्याल अकेला भटक रहा था। उसका याक खो गया था। याक खोजने वह पहाड़ के एकदम ऊपर चढ़ गया। उसने चारों तरफ देखा। थोड़ी दूर उसे कोई चलता हुआ-सा लगा। पास जाकर देखा। वह घोड़ा था। शायद वह भी खो गया था।

उत्सू ने घोड़े में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं दिखाई। उसको तो अपने याक की तलाश थी। जिसे उसने तीन महीने पहले ही खरीदा था।

बर्फीला पहाड़ चाँदनी में चमकने लगा। निराश उत्सू घर लौटने लगा। रास्ते में उसे एक आदमी आता दिखाई दिया।

उसके पीछे एक याक चला आ रहा था। उत्सू उसकी तरफ लपका।

"यह याक मेरा है।"

"होगा। यह तो मेरे पीछे यूँ ही लग गया। पर तुमको यह घोड़ा कहाँ मिला? यह मेरा है।"

उत्सू ने मुड़कर देखा। घोड़ा सचमुच उसके पीछे-पीछे चला आ रहा था।

दर्ज़ी हैं, पर फर्ज़ी हैं

आकल्पनः चन्दन यादव | चित्रः ऋषि साहनी

यह जंगल का दर्ज़ी है। वो कपड़े सिलने के बदले सामान लेता है। उसके घर का सामान देखकर अन्दाज़ा लगाएँ कि उसने किस-किसके कपड़े सिले हैं?

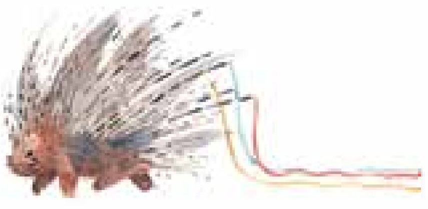

चश्मा बैठा नाक पर

धर्मवीर / चित्र: प्रोइति रॉय

चश्मा बैठा नाक पर
आँख रक्खे आँख पर
पाँव पसारे कान पर
ऐंठा अपनी शान पर

चरैवेति चरैवेति

मयंक टण्डन
चित्र: पंकज सैकिया

चरैवेति चरैवेति
चर गई भैंस मेरी खेती
खेती में लगती थी मेथी
अब भैंस है गोबर देती
हरैवेति हरैवेति

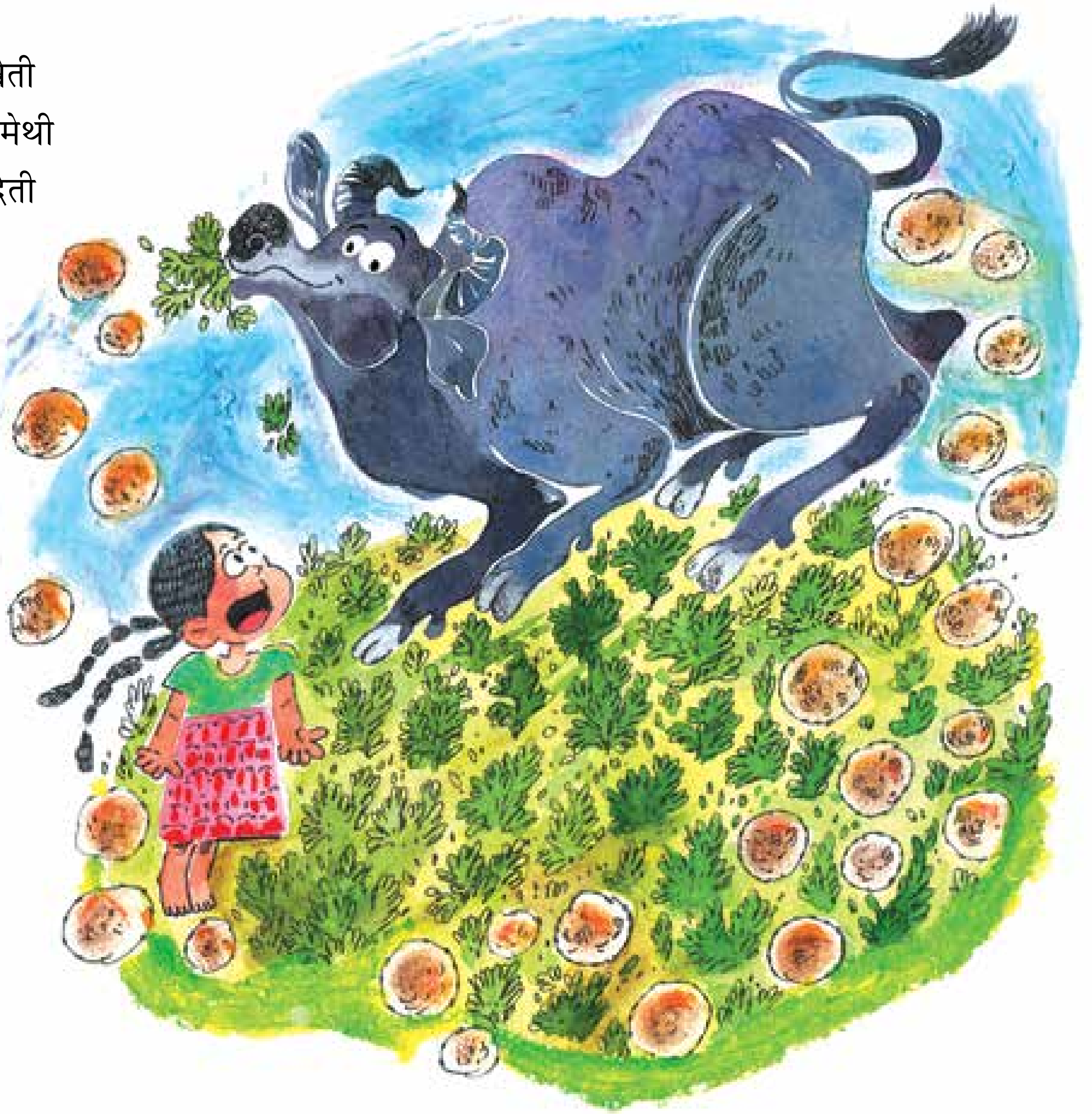

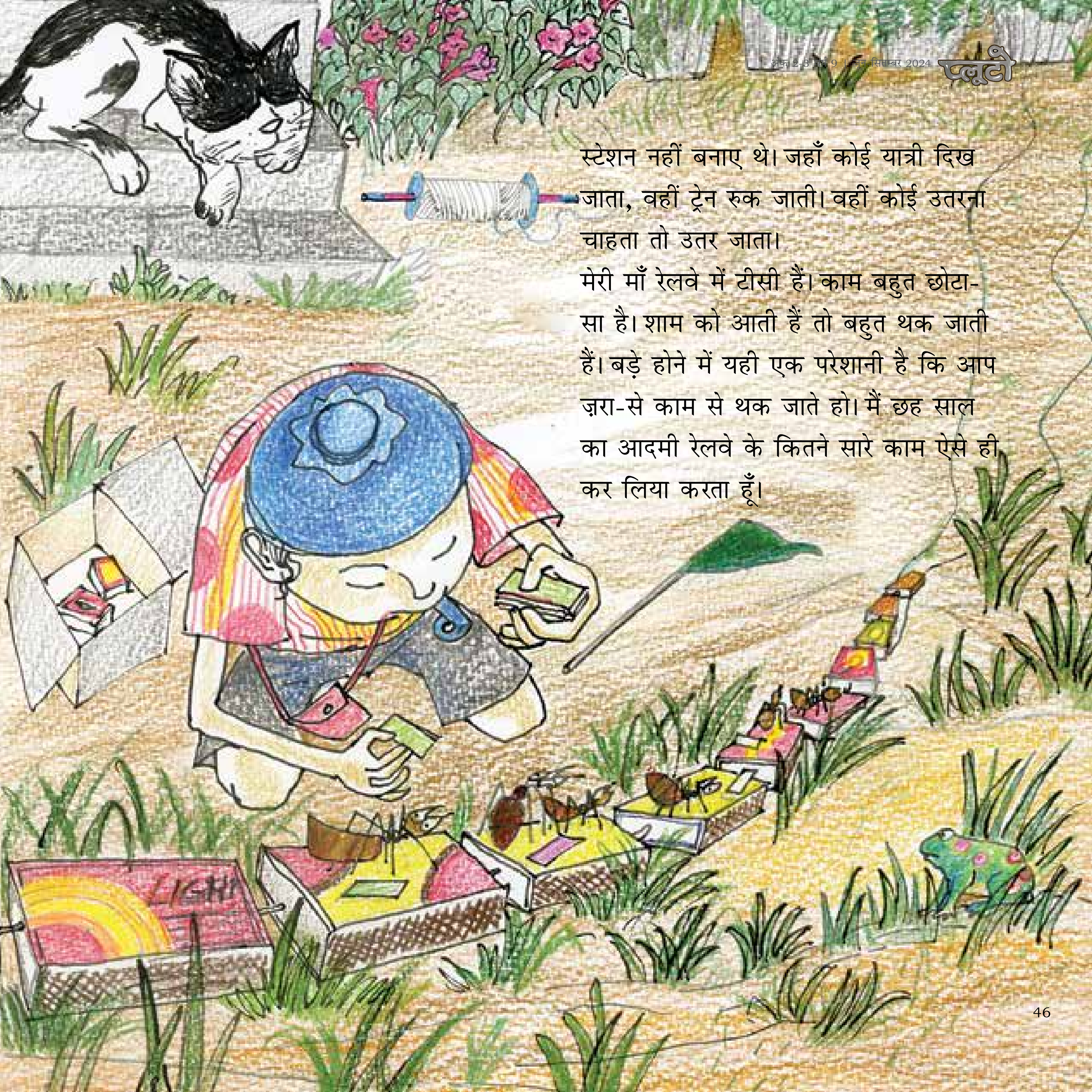

स्टेशन नहीं बनाए थे। जहाँ कोई यात्री दिख जाता, वहीं ट्रेन रुक जाती। वहीं कोई उतरना चाहता तो उतर जाता।

मेरी माँ रेलवे में टीसी हैं। काम बहुत छोटा-सा है। शाम को आती हैं तो बहुत थक जाती हैं। बड़े होने में यही एक परेशानी है कि आप ज़रा-से काम से थक जाते हो। मैं छह साल का आदमी रेलवे के कितने सारे काम ऐसे ही कर लिया करता हूँ।

में ट्रेन की सुविधा होने जा रही है। हर कोई ट्रेन में बैठने के लिए उतावला है। पहली बार ट्रेन आई है तो कई पैसेंजरों को कैसे पता कि डिब्बे में बैठना कैसे है? तो शुरू-शुरू में उन्हें पकड़कर ट्रेन में बिठाने का काम भी हम रेलवेवाले ही करते थे। उन्हें पता नहीं होता था कि वे अब ट्रेन में बैठ गई हैं और अब उन्हें नहीं चलना। चलेगी ट्रेन। वे सिर्फ बैठी रहें। मगर हमें चींटीभाषा नहीं आती थी। खैर, थोड़े से ही यात्रियों को लेकर हमारी ट्रेन रवाना हो जाती थी।

उन दिनों इस काम में बहुत लोग नहीं आए थे। मैं अकेला ही सब करता था। एक ही समय में टिकिट काटो। यात्रियों को बैठने को कहो। उनसे पूछो कि कहाँ उतरना है। एक्सीडेंट से बचने के लिए हॉर्न बजाना। कई बार मौसम खराब होता। हवाएँ चलतीं। तो ट्रेन की पटरी के उड़ जाने का खतरा रहता। और ट्रेन के स्टेशन। हमने पटरियाँ बिछा दी थीं।

माचिस की ट्रेन

सुशील शुक्ल
चित्र: तापोशी घोषाल

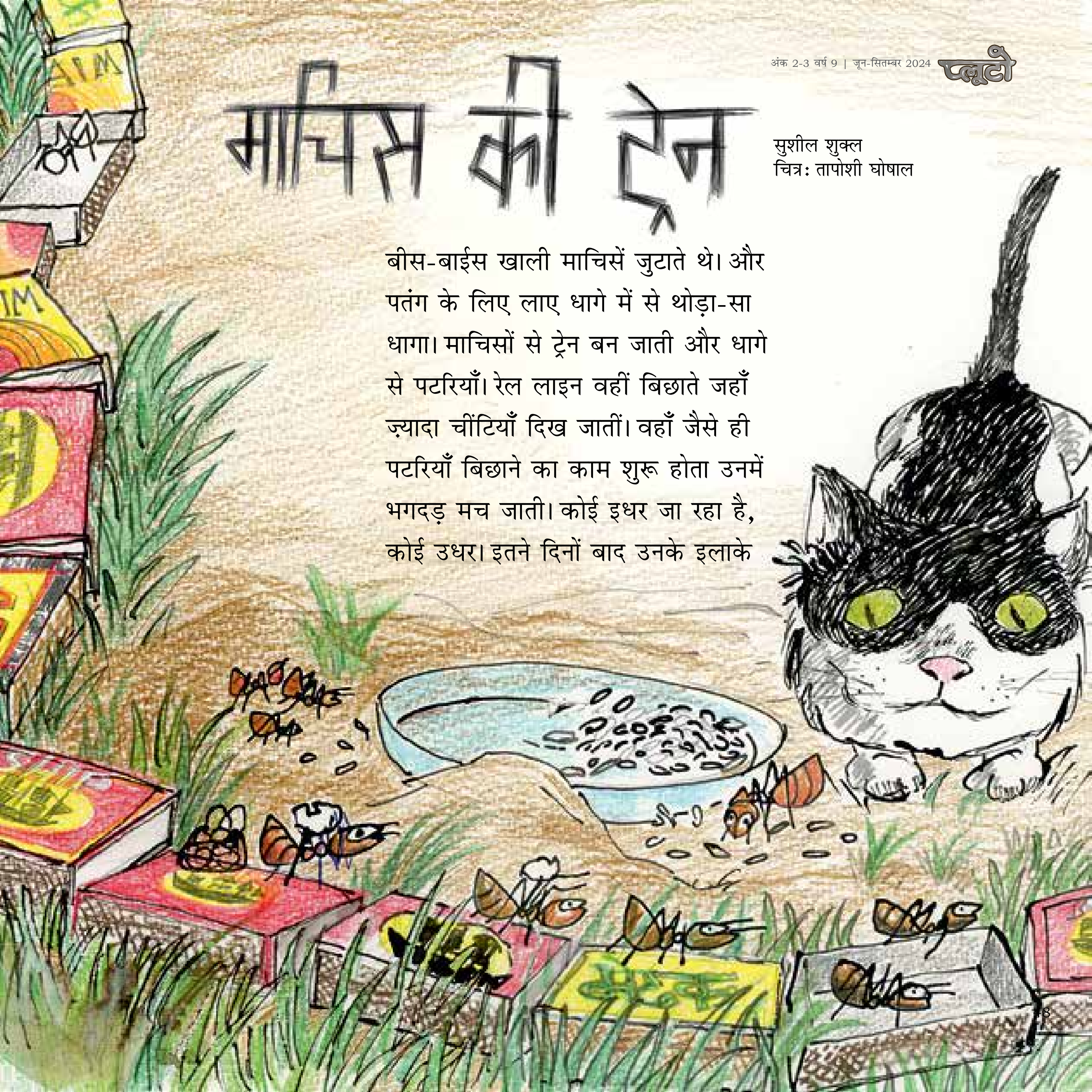

बीस-बाईस खाली माचिसें जुटाते थे। और पतंग के लिए लाए धागे में से थोड़ा-सा धागा। माचिसों से ट्रेन बन जाती और धागे से पटरियाँ। रेल लाइन वहीं बिछाते जहाँ ज़्यादा चींटियाँ दिख जातीं। वहाँ जैसे ही पटरियाँ बिछाने का काम शुरू होता उनमें भगदड़ मच जाती। कोई इधर जा रहा है, कोई उधर। इतने दिनों बाद उनके इलाके

पीऊ पीऊ

भोलाशंकर
चित्र: तापोशी घोषाल

पपीहा बोले पीऊ पीऊ
छिपकर बोले पीऊ पीऊ
दिखकर बोले पीऊ पीऊ

रुक कर बोले पीऊ पीऊ
रहा ना गया मुझसे भी
मैं भी बोला पीऊ पीऊ

लटकी कॉलोनी

शिराज़ हुसैन
चित्र: नीलेश गेहलोत

लटकी कॉलोनी में लटके
घोंसले कोई पचास
बया के बच्चे झूला झूलें
उड़ता दिखे कपास

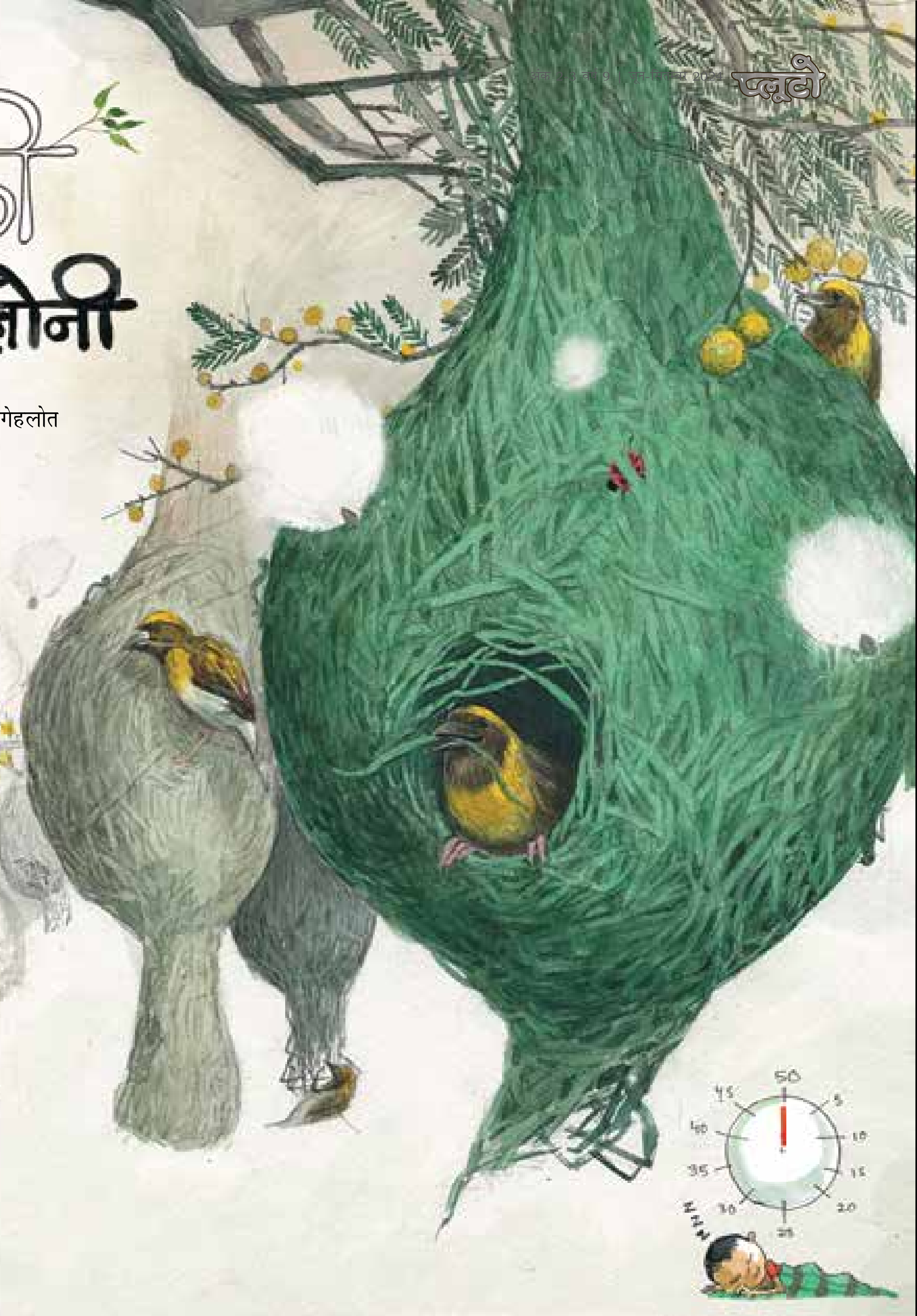

घोंघा और इल्ली

कैरोलिना गार्सिया, छठी | चित्र: शुभांगी चेतन

एक शाम एक घोंघा और एक इल्ली घूमने
निकले। घोंघे की चाल से चाल मिलाते।
तब इल्ली बोली, “अब मुझे जाना है।”
घोंघे ने पूछा, “क्यों?”
“मुझे अब तितली बनना है।” कहते हुए
इल्ली चली गई।
तब घोंघा बुदबुदाया, “मैं हमेशा मैं रहूँगा।”

(आई विल ऑल्वेज़ स्टे मी -
प्रवासी बच्चों की रचनाओं से साभार)

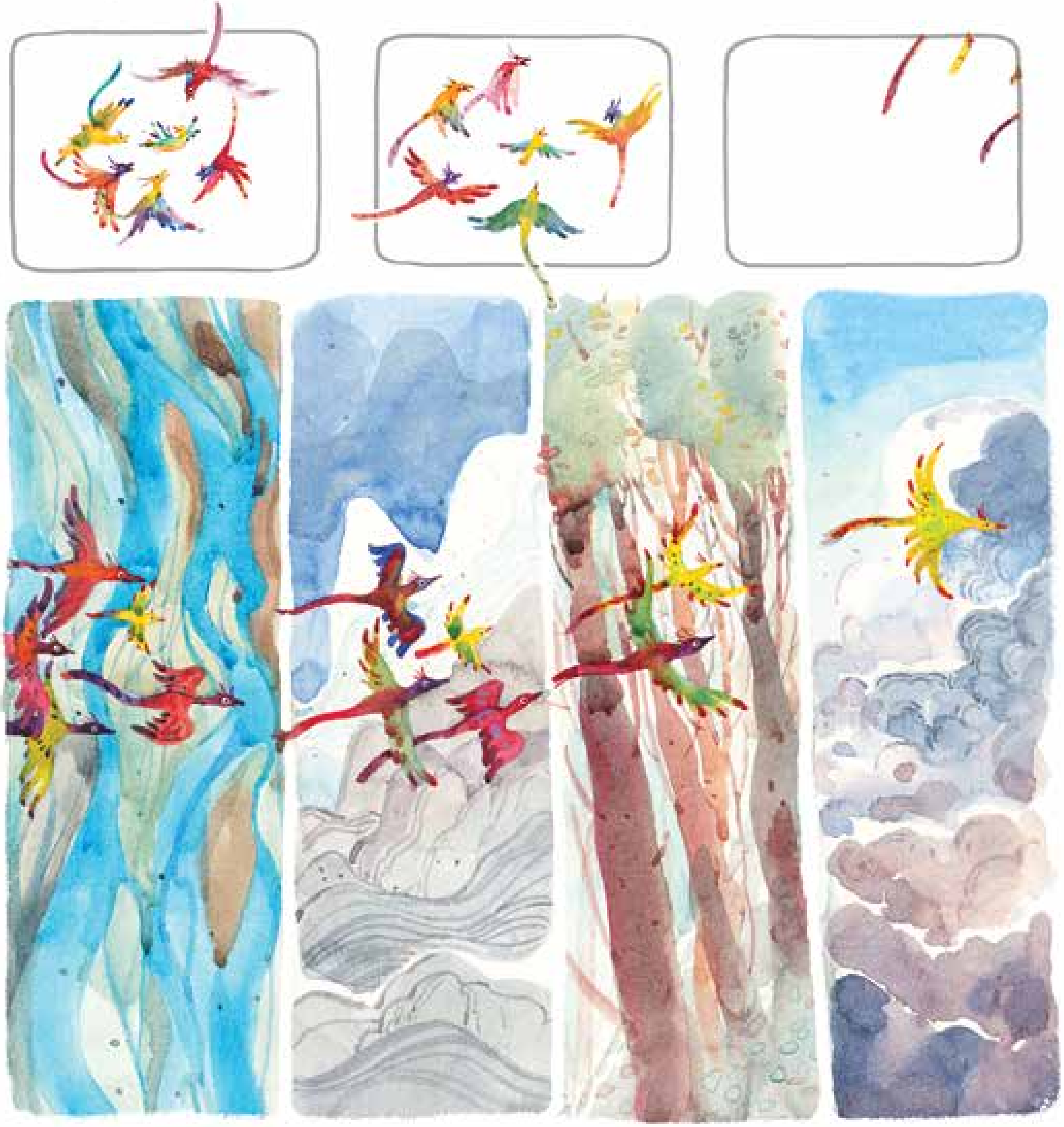

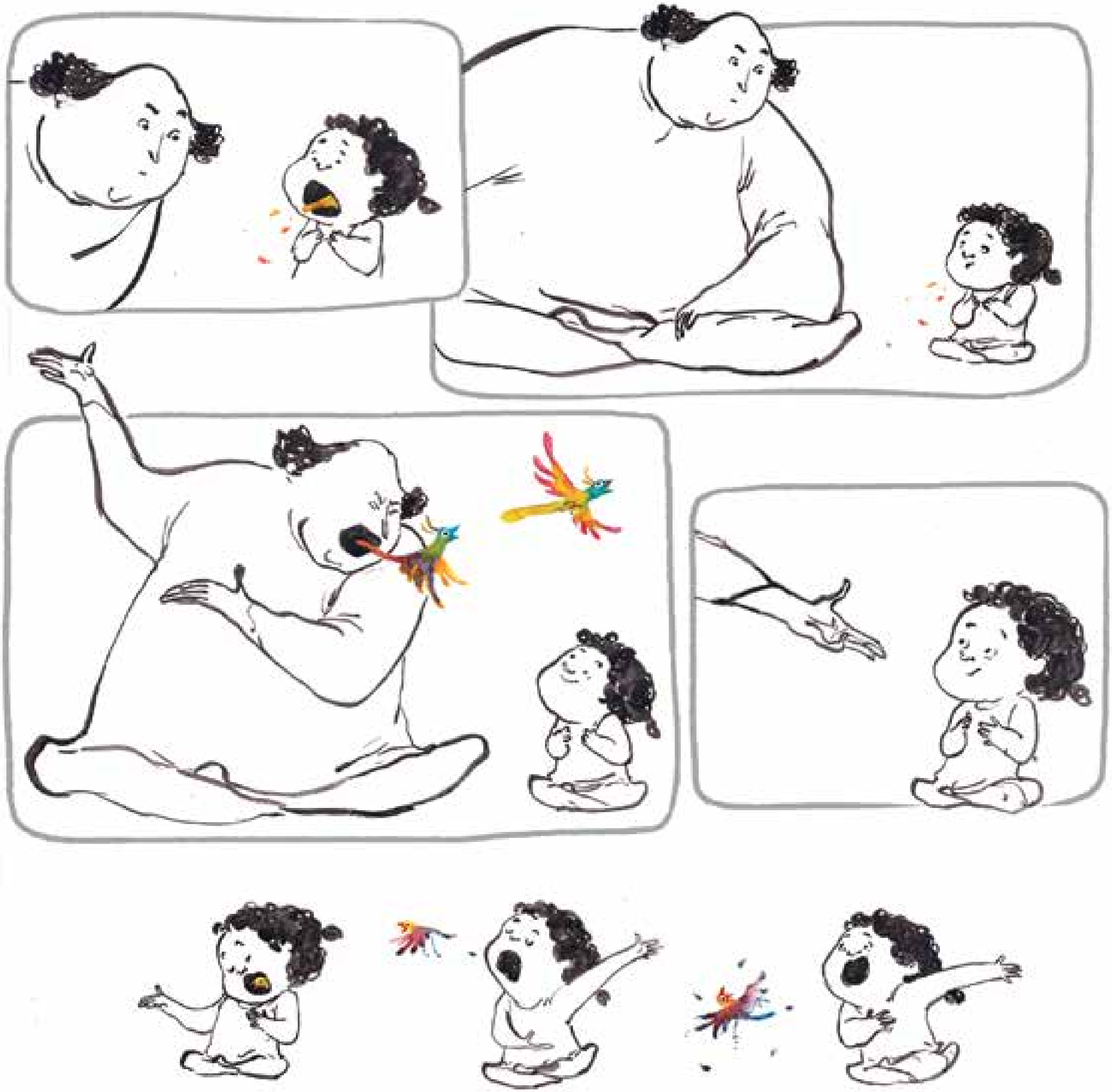

सा रे ग म पक्षी

चित्रकथा: ऋषि साहनी

ये दोनों क्या बातें कर रहे होंगे?

सिद्धार्थ कनेरिया

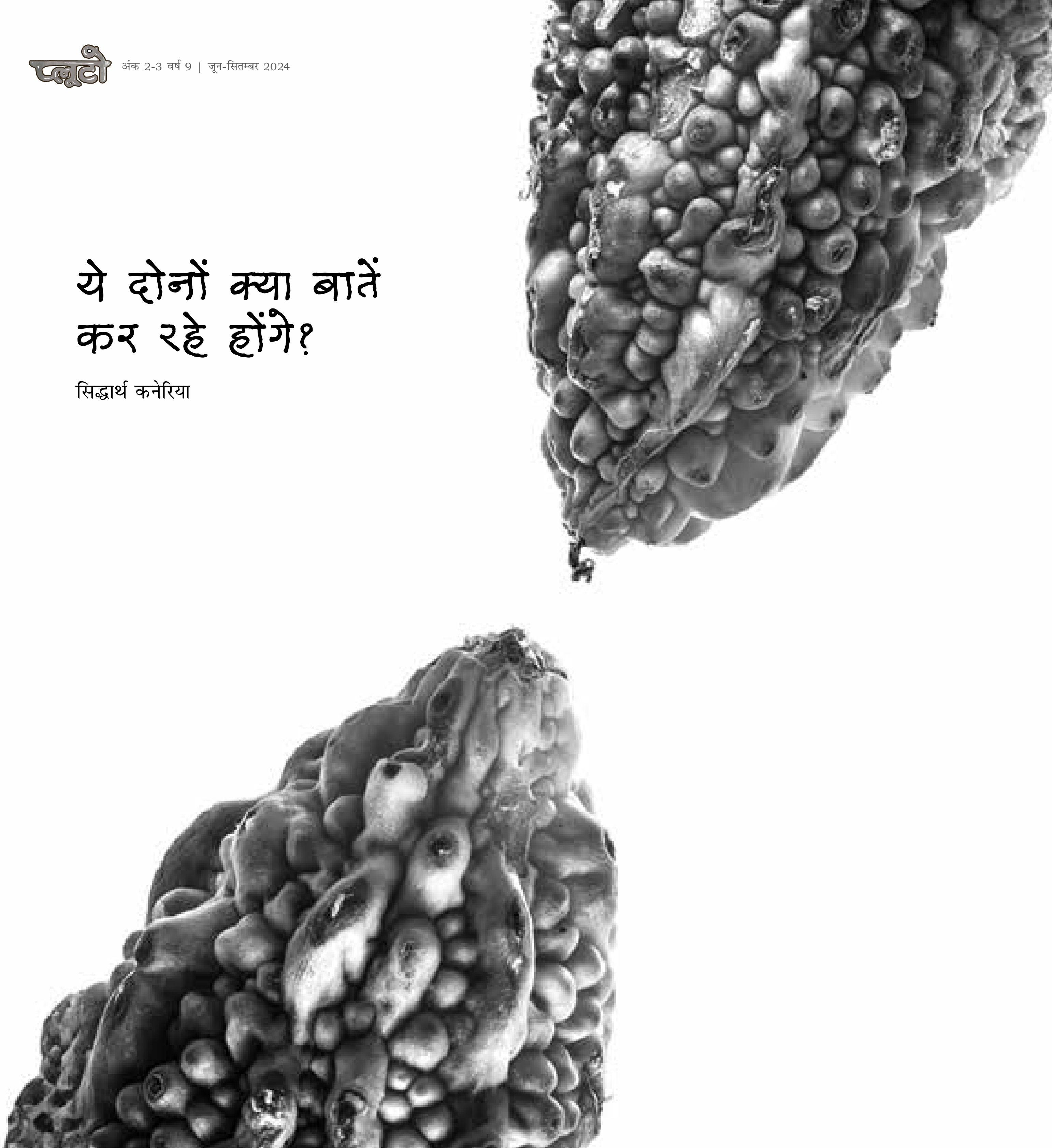

हाय बाय

सूरज सैनी, बारह साल,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र, सवाईमाधोपुर
चित्र: एलन शॉ

बिना पड़े हैरानी में
मेंढक कूदा पानी में
पानी में था साँप
मेंढक बोला अरे आप
साँप ने कहा, हाय
मेंढक बोला, बाय

गत्ते के घर में आटे की सब्ज़ी

मंजरी चक्रवर्ती

अगर तुम एक साल तक बोतलों के ढक्कन इकट्ठा करते रहो तो कम से कम 50 तो हो ही जाएँगे। मेरे पास रंग-बिरंगे, बड़े-छोटे, कई शेप वाले ढक्कन हैं। मैं सोचती रहती हूँ कि इनसे मैं क्या-क्या बना सकती हूँ। मैं गत्ते के डिब्बे, कपड़ों की कतरनें, रस्सियाँ, रंगीन कागज़, बीज, बटन, मोती, कंचे - कुछ भी नहीं फेंकती।

ये जो छोटी-सी रंग-बिरंगी दुनिया तुम देख रहे हो, वो इन्हीं सब से बनी है। चिकनी मिट्टी से सब्जियाँ बनाई हैं। तुम चाहो तो आटे से भी बना सकते हो। मुझे इसे बनाने में बड़ा मज़ा आया। अभी तो मुझे रस्सी पर सूखते कपड़े भी बनाने थे, पर टाइम नहीं मिला।

अगर तुम्हें अपने पड़ोस का रात का कोई सीन बनाना हो तो क्या बनाओगे? ठेले पर क्या होगा? गली की लाइटें कैसी होंगी? लोग कैसे होंगे? कौन-से रंगों का इस्तेमाल करोगे?

अपनी दुनिया बनाने में कितना मज़ा है...

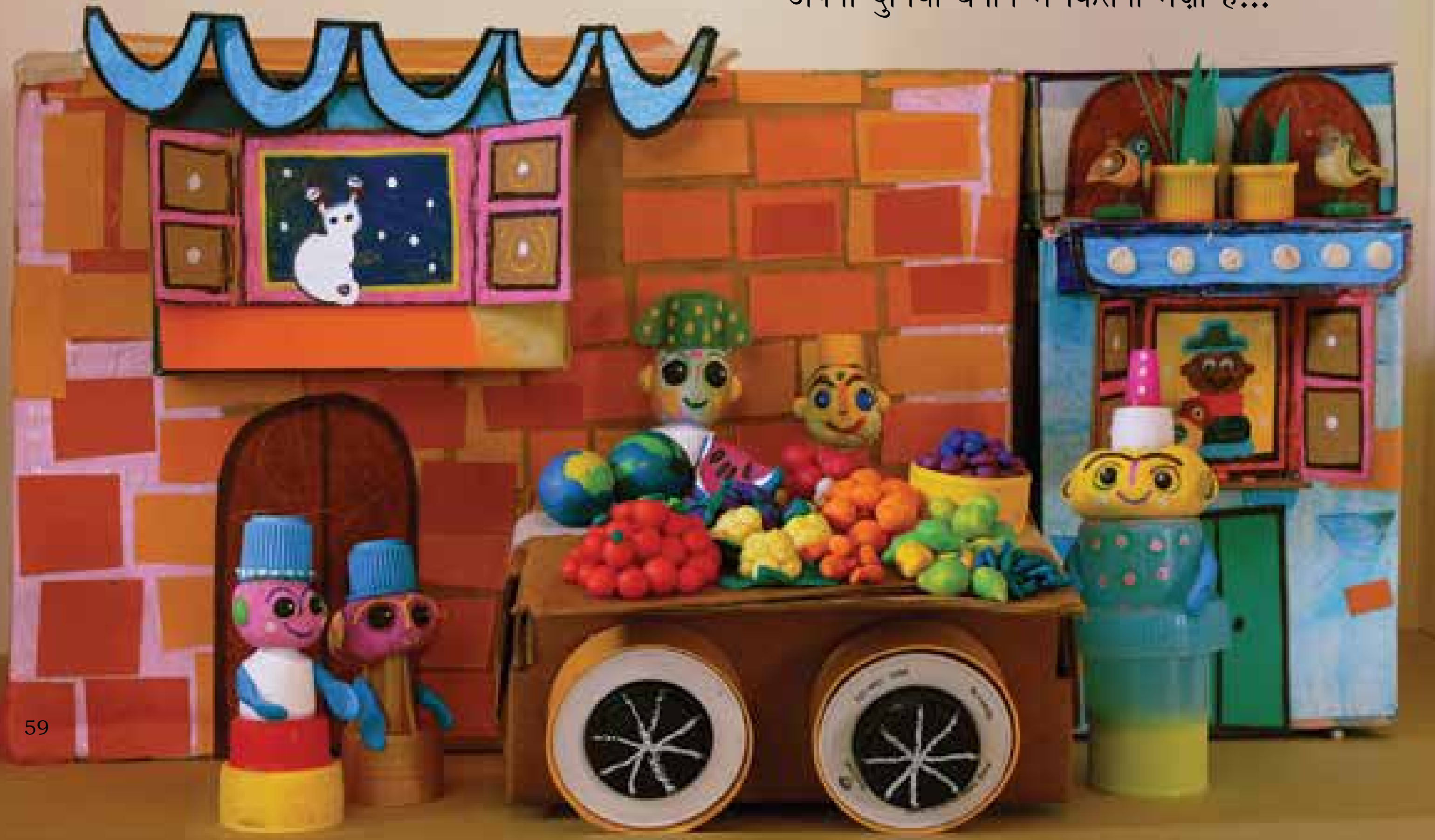

बेतुकी बात की तुक्क

मुकेश मालवीय
चित्र: रोनी देवसिया

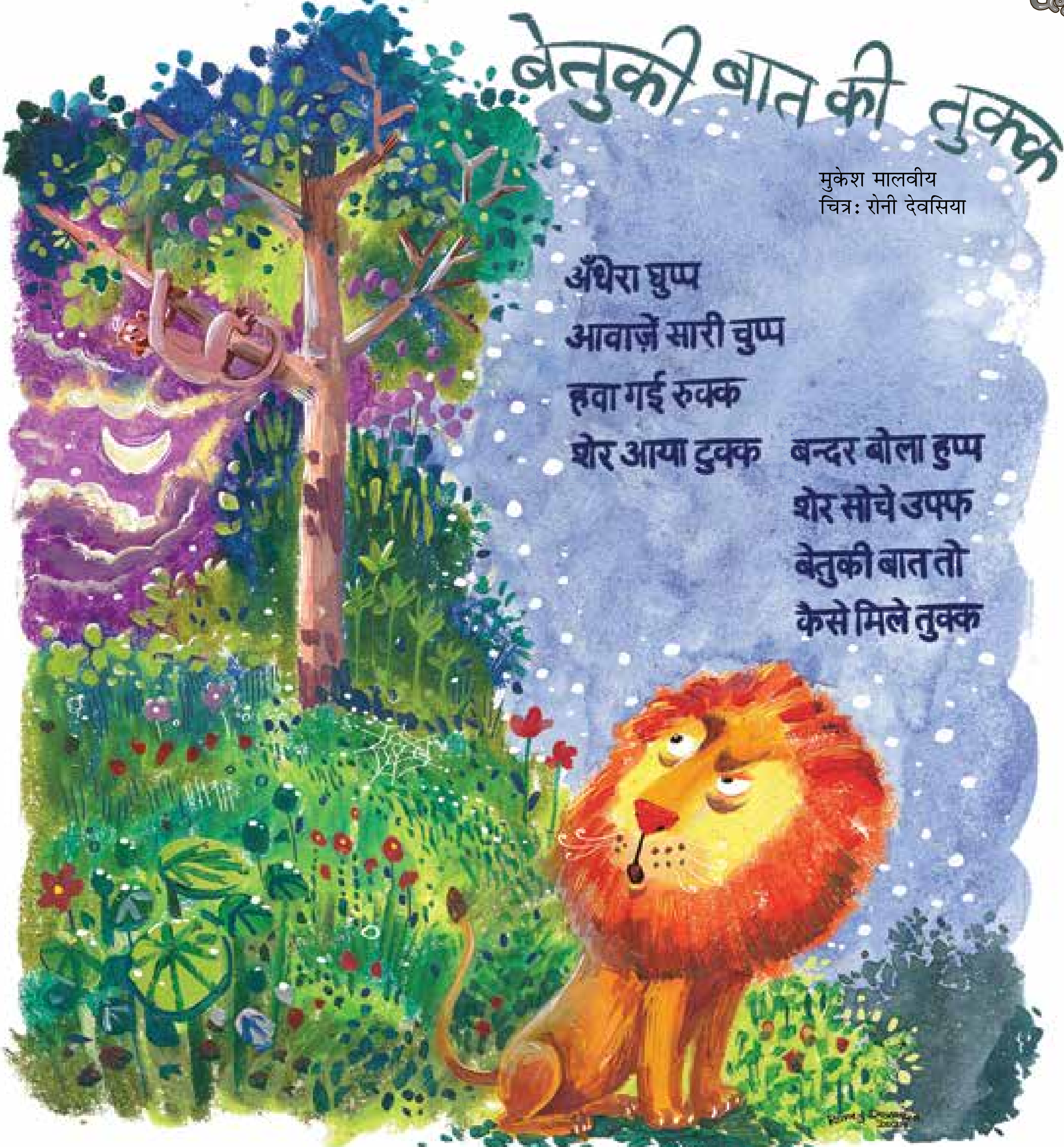

अँधेरा घुप्प
आवाज़ें सारी चुप्प
हवा गई रुक्क
शेर आया टुक्क

बन्दर बोला हुप्प
शेर सोचे उफ्फ
बेतुकी बात तो
कैसे मिले तुक्क

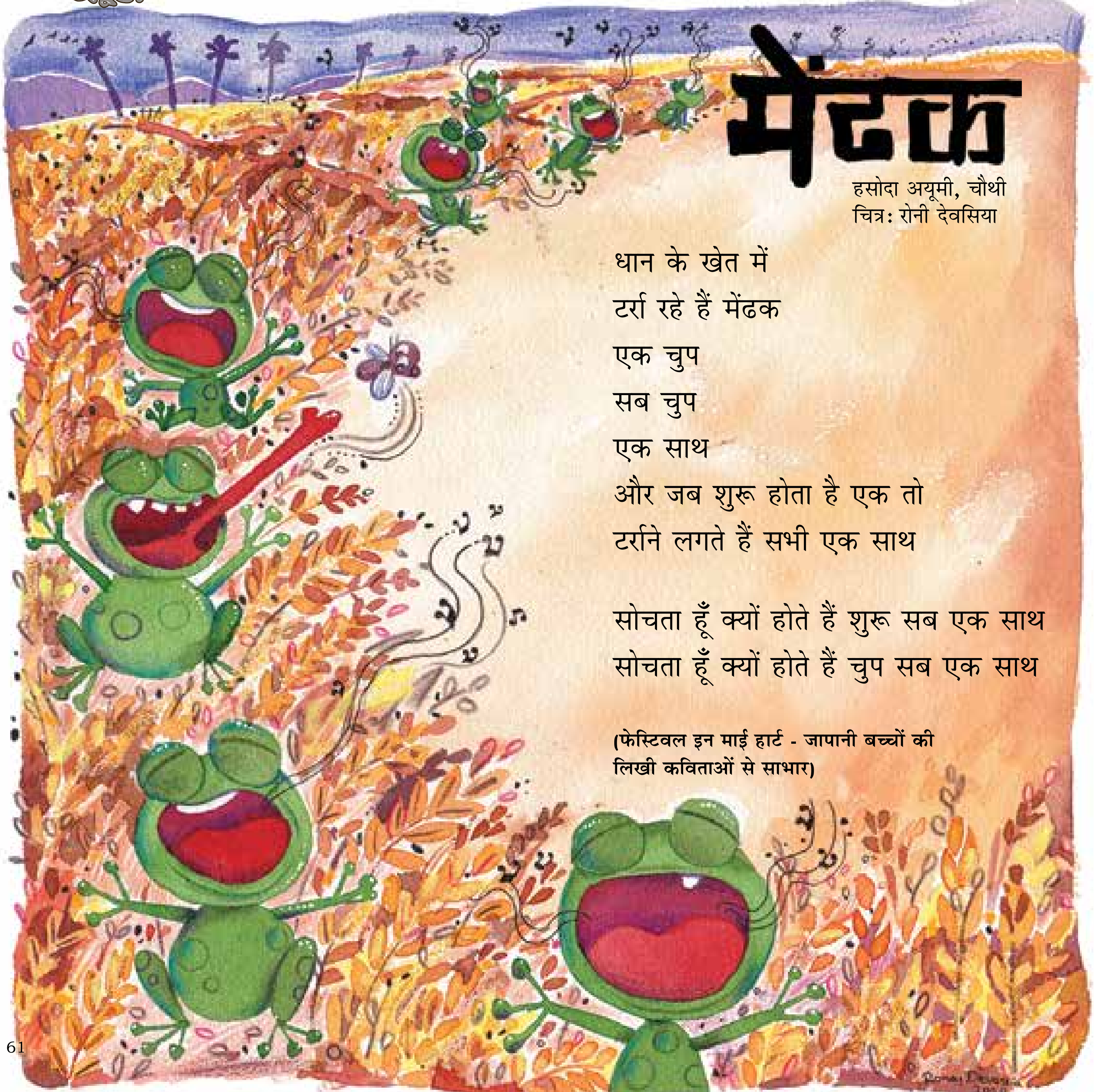

मेंढक

हसोदा अयूमी, चौथी
चित्र: रोनी देवसिया

धान के खेत में
टर्रा रहे हैं मेंढक
एक चुप
सब चुप
एक साथ
और जब शुरू होता है एक तो
टर्राने लगते हैं सभी एक साथ

सोचता हूँ क्यों होते हैं शुरू सब एक साथ
सोचता हूँ क्यों होते हैं चुप सब एक साथ

(फेस्टिवल इन माई हार्ट - जापानी बच्चों की लिखी कविताओं से साभार)

मेंढक बनाना

कनक शशि

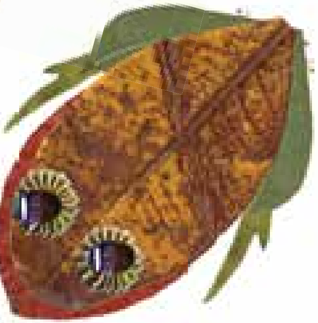

सॉरी सर...

चित्र: वसुन्धरा अरोरा

टीचर- कल होमवर्क करके नहीं लाए तो मुर्गा बनाऊँगा।
पप्पू- सॉरी सर, मुर्गा मैं नहीं खाता। आप मटर-पनीर बना लेना।

(मोरंगे से साभार)

प्लूटो
इकतारा द्वारा विकसित

दुमाही बाल पत्रिका

अवधि	अंक	सदस्यता दर (पंजीकृत डाक शुल्क सहित)
एक साल	6	₹600/-
दो साल	12	₹1150/-
तीन साल	18	₹1650 /-

एक प्रति - ₹150 (डाक खर्च अतिरिक्त)

सम्पादक
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

उपसम्पादक
चन्दन यादव
तज़ीन अली

वितरण
अनीता शर्मा
सुनील भाटी

डिज़ाइन
आस्क - आर्ट डिज़ाइन कलेक्टिव

आवरण चित्र
एलन शॉ

सहसम्पादक
दिव्या सिंह

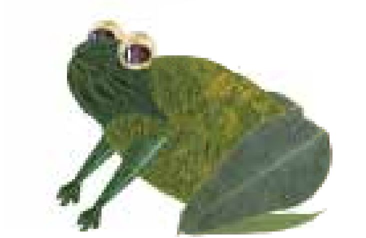

भुगतान विवरण:
बैंक ड्राफ्ट/चैक - इकतारा ट्रस्ट Ektara Trust
नई दिल्ली के नाम देय ।

ऑनलाइन ट्रांसफर
एच.डी.एफ.सी. बैंक, बी-78 डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
खाता नम्बर - 50100688089124, IFSC: HDFC0000134 में भेजें।

ऑनलाइन खरीद की लिंक
www.ektarashop.in

भुगतान और वितरण की पूरी जानकारी
publication@ektaraindia.in पर दें।

इकतारा– तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केन्द्र
2, मालवीय नगर, भोपाल 462003

फोन 0755-4939472, 9109915118, 9630097118

ई-मेल pluto@ektaraindia.in

वेबसाइट www.ektaraindia.in

मुद्रक तथा प्रकाशक संजीव कुमार द्वारा इकतारा ट्रस्ट - तक्षशिला एजुकेशन सोसाइटी की इकाई के लिए मल्टी कलर सर्विसेज़, शेड नम्बर 92, डी.एस.आई.डी.सी., ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़ 1, नई दिल्ली 110020 से मुद्रित एवं सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली 110024 से प्रकाशित। सम्पादक - सुशील शुक्ल

प्लूटो

अंक 2-3 वर्ष 9 जून-सितम्बर 2024

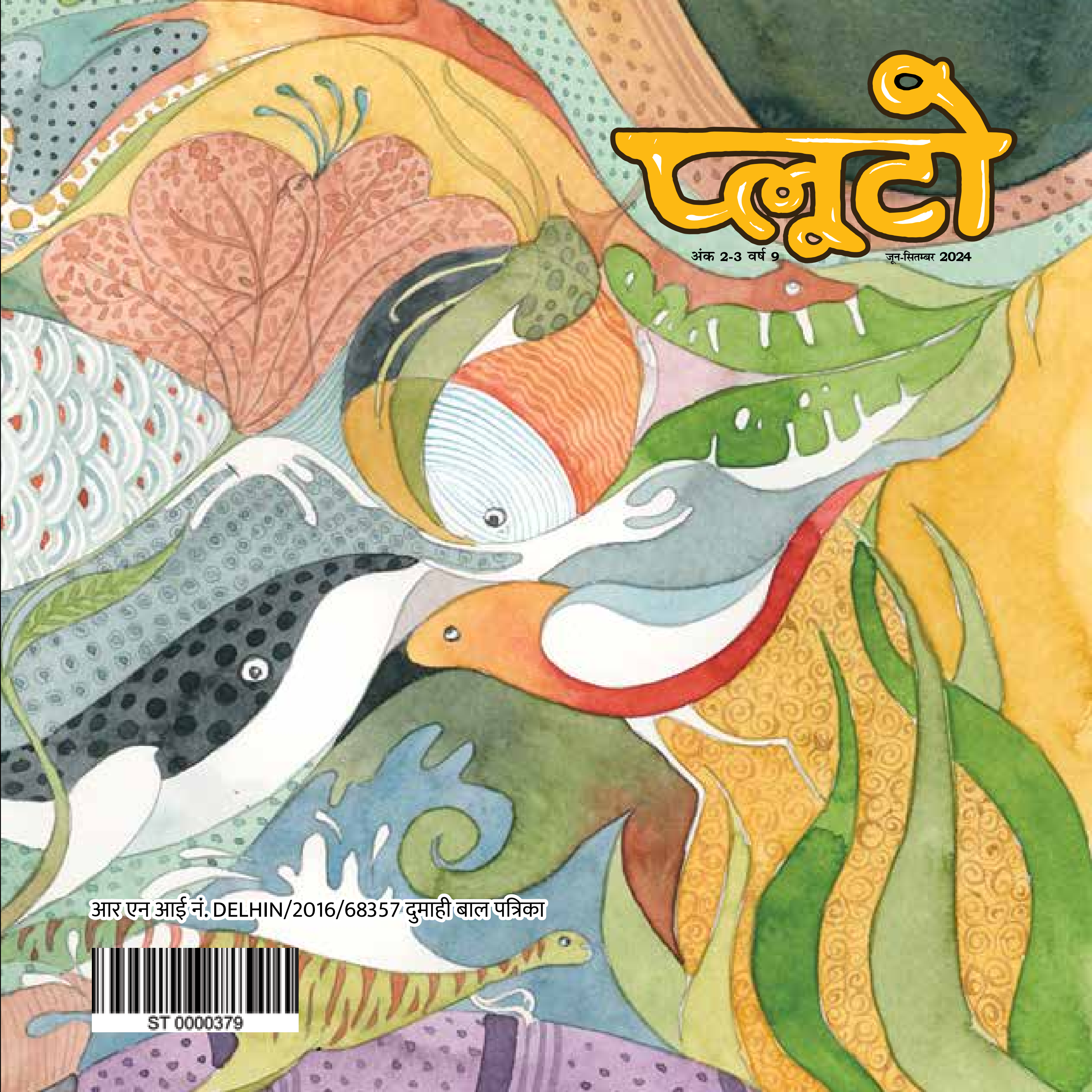

आर एन आई नं. DELHIN/2016/68357 दुमाही बाल पत्रिका

ST 0000379